मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

फूलों में लगने वाले सामान्य रोग एवं उनकी रोकथाम

राजमणि सिंह, मुफत लाल मीणा एवम शत्रुंजय यादव
उद्यान विज्ञान विभाग
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
केंद्रीय विश्वविद्यालय, विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ– 226025

फूलो की खेती को आर्थिक दृष्टि से देखा जाये तो किसान के आय का बहुत अच्छा स्रोत है, कम समय में और कम लागत से अधिक मुनाफा आसानी से कमाया जा सकता है। फूलो की व्यवसायिक खेती किसान भाइयो के लिए आर्थिक दृष्टि से बहुत ही लाभदायक है, और इससे हम कई प्रकार के उत्पाद बना कर बाजार में बेच सकते है, जिससे हम अतिरिक्त मुनाफा कमा सकते है। फूलों में विभिन्न प्रकार के रोग लगने की वजह से फूलो की मांग पर बहुत असर पड़ता है और इसके साथ–साथ फूलो की कीमत भी कम हो जाती है। इसलिए फूलो में सही समय पर इसकी रोगो का रोकथाम बहुत ही जरुरी है। सामान्यतः फूलो की खेती में मुख्य रूप से कई प्रकार के रोग देखने को मिलते है जो निम्नलिखित है :

1. तनागलन रोगः

यह रोग फंफूद से होता है। जिसका मुख्य कारक "फाइटोफ्थोरा पैरासिटिका" नामक फंफूद है। इससे बेलों के निचले सतह पर सडन शुरू हो जाती है। इस रोग से पौधे बहुत ही जल्दी पौधे मुरझाकर नष्ट हो जाता है। इसकी रोकथाम के लिए सबसे पहले हमे ये देखना चाहिए की जहा पर पौधा लगा है वहा पर पानी की निकाशी बहुत ही अच्छा होना चाहिए, पौध के पास पानी रुकने की वजह से मुखतः यह बीमारी होती है। रोगी पौध को सामान्यतः जड़ से उखाड़कर जला देना चाहिए या तो किसी भी तरीके से पूरी तरह से नष्ट कर देना चाहिए। फूल की बुवाई से पूर्वे भूमि को बोर्डोमिश्रण से भूमि का शोधन करना चाहिए। फसल पर तनगलन दिखने पर हमको तुरंत 0.5 प्रतिशत बोर्डोमिश्रण का फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

2. पर्णगलन रोगः

यह रोग भी फंफूद से होता है। जिसका मुख्य कारक "फाइटोफ्थोरा पैरासिटिका" नामक फंफूद है। इस कवक की वजह से फूलो की पत्तियों पर गहरे भूरे रंग की छोटे– छोटे आकर के धब्बा बन जाते है, बाद में ये बड़े आकर लेते है और फसल को बहुत ही नुक्सान पहुचाते है। इसकी रोकथाम के लिए सबसे पहले हमे रोगी पौध को सामान्यतः जड़ से उखाड़कर पूरी तरह से नष्ट कर देना चाहिए। इस रोग का सबसे मुख्य कारण सिचाई का पानी होता है इसलिए हमेसा शुद्ध पानी सिचाई करने के लिए प्रयोग करना चाहिए। फसल पर रोग दिखने पर हमको तुरंत 0.5 प्रतिशत बोर्डोमिश्रण का फसल पर छिड़काव करना चाहिए।

3. चूर्णिल आसिता (पाउडरी मिल्ड्यू):

यह रोग भी फंफूद से होता है। इस रोग के कारण पौधों के पत्ती, फूल, तना और कलियों पर सफेद रंग का पावडर जैसा एक परत दिखाई देता है। इस रोग से संक्रमित होने के कारण फूलो की कालिया खिलाती नहीं है। इस रोग में सफेद परत बन जाने के कारण प्रकाश संश्लेषण प्रभावित होता है, जिससे फूल की उपज पर बहुत अधिक प्रभाव पढ़ता है। एकाएक जलवायु में परिवर्तन होने के कारण चूर्णिल आसिता रोग लगता है ।

रोकथामः इस रोग का प्रभाव फसल पर दिखाई देने पर सावधानी पूर्वक फफूदी नाशक का प्रयोग सही मात्रा में करना चाहिए। केराथेन 1.0 मि.ली. 12 से 15 दिन के अंतराल पर पौधों पर 2–3 छिड़काव करना चाहिए।

4. पत्ती धब्बाः

यह रोग भी फंफूद से होता है। रोग के कारण पौधों के पत्ती, तना और फूल पर भूरे या काले और बैगनी रंग के धब्बे दिखाई देते है। रोगग्रस्त पत्तियां पीली हो जाती है और मुरझाकर गिर जाती है। इस रोग को सर्वप्रथम पौधे के निचले पत्तियों पर देखा जा सकता है। बाद में तने पर भूरे रंग का दिखाई देता है जो की बाद में पूरी तरह से काले रंग में परिवर्तित हो जाते है ।

रोकथामः मैंकोजेब 2 मि.ली.लीटर 15 दिन के अंतराल पर पौधों पर 2–3 छिड़काव करना चाहिए। फसल को हमेसा सही समय पर लगाना चाहिए जिससे रोग के रोकथाम में आसानी होगी।

5. आद्र गलनः

आद्रगलन रोग मुख्यतः नर्सरी में लगता है। इससे नर्सरी में छोटे पौधे प्रभावित होते है। इस रोग के प्रभाव से पौधे का तना जो की जमीन की सतह से जुड़ा होता है काला पड़कर सड़ने लगता है और नर्सरी के पौधे सड़कर गिरने लगते है। आद्रगलन रोग मुख्यतः भूमि और बीज के माध्यम से लगता है।

रोकथामः बीज की बुआई नर्सरी में करने से पहले बीज को 3 ग्राम थीरम/ किलोग्राम बीज के हिसाब से उपचारित करके नर्सरी डालना चाहिए।

6. शीर्ष भाग का सुखनाः

यह रोग मुखतः फूलो के पौधों के कटाई के बाद यह पौध के ऊपरी भाग से निचली भाग की तरफ सूखता है और इस रोग में प्रभावित भाग काले रंग के हो जाते है और बाद में पूरे तरह से सुख जाते है। यह रोग ज्यादातर गुलाब पौध में लगता है एवं अधिकतर यह रोग गुलाब के पुराने पौधों में लगता है । रोकथामः रोगग्रस्त भाग को स्केटियर से काटकर अलग कर देना चाहिए और कटे हुए भाग पर चौबटिया पेस्ट लगाना चाहिए।

7. ग्रीवा गलनः

यह भी फंफूद से होता है। जिनका मुख्य कारक "स्केलरोशियम सेल्फसाई" नामक फंफूद है। इस रोग के प्रभाव से बेलों में गहरे घाव विकसित हो जाते है, पत्ते पीले पड़ जाते हैं और फसल पूरी तरह से नष्ट हो जाती है।

रोकथामः रोग जनित पौध को उखाडकर पूर्ण रूप से नष्ट कर देना चाहिये। फसल के बुवाई के पूर्व भूमि शोधन करना चाहिये। फसल पर प्रकोप निवारण हेतु डाईथेन एम0–45 का 0.5 प्रतिशत घोल का छिडकाव करना चाहिये।

8. उकठा रोगः

उकठा रोग से प्रभावित पौध पूरी तरह से सुख कर नष्ट हो जाता है। उकठा रोग फसल में कभी भी लग सकता है ।इसकी रोकथाम के लिए फसल चक्र अपनाना चाहिए स गर्मी समय जब खेत खाली हो तो खेत की गहरी जुताई करके कुछ समय के लिए छोड़ देना चाहिए। खेत में जब फसल हो तो गुड़ाई सावधानी पूर्वक करना चाहिए ताकि पौधों के जड़ो में चोट न लगे क्यों की इससे रोग का प्रकोप बढ़ता है ।